न्यूगिनी

न्यूगिनी

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—स्थिति तथा विस्तार

२—जलवायु

३—सामाजिक संगठन

४—संक्षिप्त इतिहास

५—निवासी
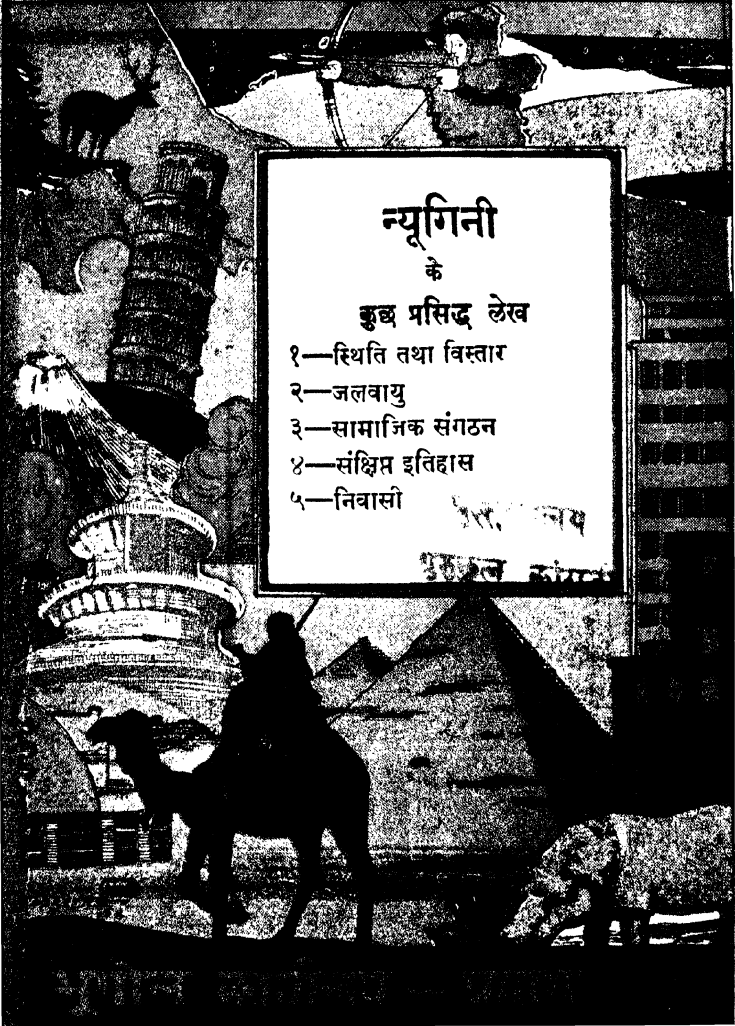
अप्रैल १९४२] **देश-दर्शन** [वैशाख १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] न्यूगिनी [संख्या १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

नोट:—५१ पर 'जादूगर का घर' के स्थान पर 'जादूघर का दिन' भूल से छप गया है। पाठक इसे विषय-सूची में और ५१ पृष्ट पर सुधार कर पढ़ें।

स्थिति तथा विस्तार

न्यूगिनी द्वीप प्रशान्त महासागर में आस्ट्रेलिया के उत्तर की ओर स्थित है। इस द्वीप के उत्तरी-पश्चिमी सिरे से भूमध्य रेखा जाती है और दक्षिणी-पूर्वी सिरे से १२ अंश वाली दक्षिणी अक्षांश रेखा गुज़रती है। पूर्व से पश्चिम को यह द्वीप १३० अंश पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। यह द्वीप आस्ट्रेलिया से टोरेस प्रणाली तथा अराफरा सागर द्वारा अलग है। इसके पूर्व में बिस्मार्क द्वीप समूह स्थित है।

समस्त न्यूगिनी का क्षेत्रफल ३,१२,३२६ वर्गमील है। ब्रिटिश न्यूगिनी (पापुआ प्रदेश) का क्षेत्रफल ६०५४० वर्ग मील और डच न्यूगिनी का क्षेत्रफल १,५१६,७८६ वर्गमील है। न्यूगिनी का मैंडेटेड भाग आस्ट्रेलिया की सरकार के आधीन है।

सूचना

न्यूगिनी पहाड़ी द्वीप है। इसके मध्यवर्ती भाग में एक लम्बी पर्वतीय श्रेणी चली गई है जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की चट्टानें पाई जाती हैं। उत्तरी तट पर एक पर्वतीय श्रेणी पश्चिम से पूर्वी सिरे तक फैली हुई है। दक्षिणी तट पर भी एक छोटी निचली पर्वतीय श्रेणी है। फलाई नदी के पश्चिम की ओर कछारी भूमि के मैदान हैं जो नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी से बने हैं और वहां पर भूमध्य रेखीय वर्षा होती है।

न्यूगिनी की बनावट से पृथ्वी के भीषण गति का पता चलता है। बन्दा द्वीप समूह, बारूसेराम, पश्चिमी तिमोर लौट, पूर्वी तिमोर लौट, की द्वीपसमूह आदि इसी गोले भाग के अंश हैं। दक्षिणी-पश्चिमी न्यूगिनी की तटीय पहाड़ी श्रेणियां बैक पहाड़ियों से फाटिंगेर अंतरीप की ओर फिर वहां से मिसोल, ओबी द्वीप और हल्महेरा के पश्चिमी भाग को जाती हैं। यह गोलाकार भाग पश्चिमी न्यूगिनी में मध्यवर्ती पर्वतीय श्रेणी से मक्लबेर खाड़ी द्वारा अलग हो जाता है। मध्यवर्ती पहाड़ी श्रेणी उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर फैली हुई है। पश्चिम की ओर मध्यवर्ती श्रेणी में चार्ल्स लूई

और नासायु पर्वत हैं। इस भाग में १४६०० फुट की ऊँचाई पर बरफ पड़ती है। इडेनबर्ग चोटी (१५१५० फुट ऊँची) और विलहेल्मिना चोटी (१५३१२ फुट) पर हिमागार हैं। इस पहाड़ी श्रेणी के उत्तर की ओर २५ से ४५ मील तक लगभग समानान्तर पहाड़ियाँ हैं जिनकी उँचाई वीजलैंड में १२५०० फुट देखी गई है। मैंडेटेड प्रदेश में यह श्रेणी जल विभाजक का काम करती है। मैंडेटेड प्रदेश ओटो पर्वत की उँचाई १३७०० फुट तक है। दक्षिणी भाग के पर्वत कम ऊँचे हैं। मध्यवर्ती श्रेणी का दक्षिणी पूर्वी भाग ओवेनस्टेनली श्रेणी के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें अल्बर्ट एडवर्ड नामक चोटी की उँचाई १३२२० फुट है।

मध्यवर्ती पहाड़ी श्रेणी के पश्चिमी भाग की चट्टानें प्राचीन हैं। प्राचीन चट्टानों के ऊपर स्लेट, बलुआ पत्थर और चूने का पत्थर पाया जाता है। डच न्यूगिनी में मिओसेने चट्टानें निंचले प्रदेश में मिलती हैं। न्यूगिनी के दक्षिणी-पूर्वी भाग में प्राचीन चट्टानें पाई जाती हैं जिसमें कुछ चट्टानों में सोना, चूने का पत्थर आदि मिलता है। इस भाग में पुटीकृत पर्वत भी हैं। डीएंट्रे-

कास्टेयुक्स द्वीप समूह में आग्नेय पर्वत के चिन्ह मिलते हैं। आग्नेय पर्वतों में मिओसेने, प्लिओसेन, प्लीस्टोसीने आदि पर्वत नवीन कालीन हैं।

डच न्यूगिनी के तटीय पर्वतों की ऊँचाई ६६०० फुट तक है। यह पर्वतीय श्रेणी सेपिक के मुहाने के समीप निचली होकर आगे फिर ऊँची हो जाती है और किंग विलियम्स अंतरीप के समीप पर्वतीय श्रेणी की ऊँचाई १०५०० फुट तक है। यह भाग अधिकतर प्राचीन चट्टानों से बना है। इसमें नवीन शिलायें हैं। नवीन शिलायें प्रवाल चट्टानों से अभी बन रही हैं। यह प्रवाल चट्टानें ५५०० फुट ऊँची श्रेणी तक मिलती हैं। डिगूल और फ्लाई नदी के मध्य दक्षिणी पहाड़ियों की बनावट आस्ट्रेलिया के पर्वतों की सी हैं। इन पहा-ड़ियों के बीच निचले मैदान पाये जाते हैं।

न्यूगिनी की प्रसिद्ध नदियाँ माम्बेरामो, सेपिक आदि हैं। माम्बेरामो नदीनाम्रू के उत्तर समुद्र में प्रवेश करती है। सेपिक नदी भी उत्तर की ओर है और उसमें १८० मील तक समुद्र में चलने वाले स्टीमर चलते हैं। फ्लाई नदी पापुआ की खाड़ी में गिरती है। इसमें ६००
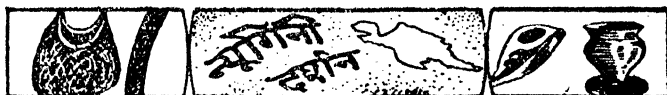
मील तक ह्वेल-नावें चलती हैं। डीगूल नदी दक्षिण की ओर है। मुरुआ में मूर्तियाँ आदि बनाने के लिये अच्छा पत्थर मिलता है। पामुआ खाड़ी के समीप पिट्रौल निकलता है। सोना आदि निकालने का काम कम होता है। समुद्र से लोग मोती, मोती के शंख, कछुये और ट्रेपांग नामी जन्तु निकालते हैं।

जलवायु

न्यूगिनी के उत्तरी भाग में ग्रीष्म काल में व्यापारिक हवायें चलती हैं। यह हवायें दक्षिणी-पूर्वी भाग में वर्षा करती हैं परन्तु अधिक दक्षिण-पश्चिम की ओर वर्षा कम होती जाती है। उत्तर की ओर पूर्वी तट पर गरमी के दिनों में वर्षा अधिक होती है। आगे पश्चिम की ओर वर्षा कम होती है परन्तु व्यापारिक हवायें चलती हैं। न्यूगिनी के दक्षिणी भाग का ग्रीष्म काल एशियाई हवाओं के मार्ग में पड़ता है। इस भाग में उत्तर-पश्चिम से चक्कर काटती हुई उत्तर-पूर्व की ओर हवायें चलती हैं। इन हवाओं से उत्तरी न्यूगिनी तथा डच न्यूगिनी के दक्षिणी भाग में अच्छी वर्षा हो जाती है। यहाँ ९६ इञ्च सालाना वर्षा होती है परन्तु ३ हज़ार से ६५०० फुट तक की ऊँचाई में और अधिक वर्षा होती है। निचले भाग में भिन्न भिन्न स्थानों में भिन्न प्रकार की कम या अधिक वर्षा होती है। न्यूगिनी के औसत से प्रातःकाल का ताप ७२ अंश और मध्यान्ह काल का ताप ९२ अंश है।

भूमध्य रेखा के अक्षांशों में स्थित होने के कारण न्यूगिनी की जलवायु अत्यन्त उष्ण है। इसी कारण यहां वर्षा भी भारी होती है।

वनस्पति

बनस्पति तथा पशु

न्यूगिनी का ग्रीष्म (सूखा) काल बड़ा होता है इसलिये वहां के बनैले पौधे अधिक नहीं बढ़ सकते हैं। बनों में अधिकतर वर्षा कालीन पौदे उगते हैं। १०५०० फुट की ऊँचाई तक न्यूगिनी में बनस्पति पाई जाती है। पर्वतों के ऊपर योरुपीय, हिमालय प्रदेश, न्यूज़ीलैण्ड और दक्षिणी अमरीका के बृक्ष पाये जाते हैं। ६०० फुट से अधिक ऊँचे स्थानों पर देवदार, अगापेटेस और नारियल के बृक्ष पाये जाते हैं। निचले प्रदेश में नारियल के जंगल बहुत हैं। नदियों के किनारे बांस के किस्म की झाड़ियां बहुत हैं। जिन स्थानों पर नमी रहती है वहां और दलदलों के समीप साबूदाने के वृक्ष बहुत हैं। घास, बांस, बेंत तथा झाड़ियां पानी वाले स्थानों में बहुत होती हैं। स्टेप्स में लम्बी लम्बी घासें बहुत उगती हैं। समुद्र तट के पास नारियल, साबूदाना केला और आम के वृक्ष उगते हैं।

न्यूगिनी पहले आस्ट्रेलिया का एक भाग था। इसी कारण यहां की बनस्पति तथा पशु बहुत कुछ आस्ट्रेलिया की बनस्पति और पशु से मिलते जुलते हैं। न्यूगिनी

के घास के मैदानों तथा उच्च प्रदेश के बनों में छोटे वंश का कँगारू पशु मिलता है। सुअर तथा डिंगो (आस्ट्रेलियन कुत्ता) भी बहुत हैं। यहां चमगादड़ बहुत ज्यादा पाये जाते हैं। चूहे और गिलहरियां तो घास के मैदानों में बहुत पाई जाती हैं। यहां लगभग ५० प्रकार के चूहे और लगभग ५०० क़िस्म के पक्षी मिलते हैं इनमें ५० भांति के पत्ती तो ऐसे हैं जो और दूसरे देशों में नहीं पाये जाते हैं। घास के मैदानों में शिकारी पत्ती चूहों का शिकार करते हैं यहां बनों में एक प्रकार का सुन्दर स्वर्गीय पत्ती पाया जाता है। तितलियां भी बड़ी सुन्दर रंगों की पाई जाती हैं। यहां भारत, मलय प्रदेश के कीड़े मकोड़े भी बहुत हैं। समुद्र तट पर कछुये बहुत हैं।

छिपकिली जाति के पशु बहुत हैं। मकड़े बहुत बड़े पाये जाते हैं। सांप तथा बिच्छू भी बहुत पाये जाते हैं बिच्छू बड़े जहरीले होते हैं। बन्दर, लंगूर और मूला पशु भी बहुत हैं।

इस समय न्यूगिनी की अवस्था अनिश्चित है। लगातार जापानी हवाई हमले हो रहे हैं। ब्रिटिश और आस्ट्रेलियन हवाई जहाज़ उसकी अभी तक रक्षा कर रहे हैं। आस्ट्रेलिया को जापानी हमले से सुरक्षित रखने के लिये न्यूगिनी का बचाना आवश्यक है। न्यूगिनी द्वीप उत्तरी आस्ट्रेलिया का अचूक पहरेदार है।
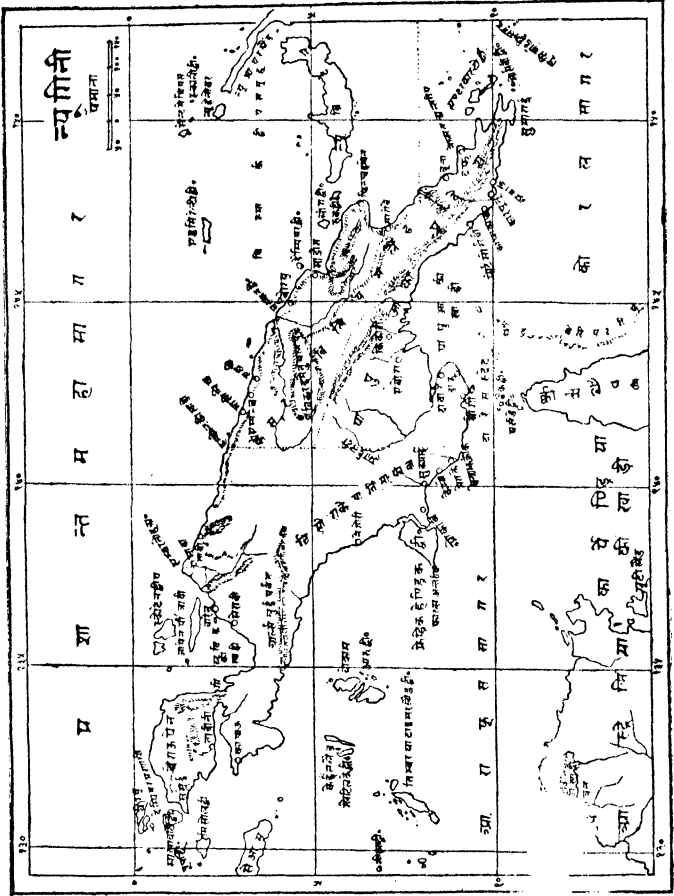
न्यूगिनी
पैमाना
प्रशान्त महासागर
अराफूर सागर
कोरल सागर
कार्पेन्ट्रिया की खाड़ी
आस्ट्रेलिया
पापुआ
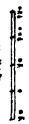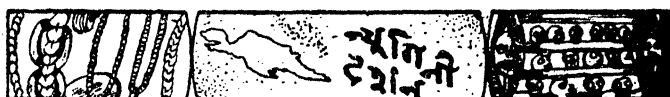
राजनैतिक विभाग

न्यूगिनी का टापू तीन राजनैतिक विभागों में बँटा है। (१) ब्रिटिश न्यूगिनी, (२) न्यूगिनी का मैण्डेटेड प्रदेश और (३) डच न्यूगिनी।

ब्रिटिश न्यूगिनी

न्यूगिनी या टापुआ का क्षेत्रफल ९०,५४० वर्ग-मील, योरुपीय जन-संख्या १,४५२ और देशी जन-संख्या लगभग २ लाख ७५ हज़ार है। जब १८८४ ई० में टापुआ का प्रदेश क्वीन्सलैण्ड की सरकार ने अपने में शामिल कर लिया तो ब्रिटिश न्यूगिनी ब्रिटिश संरक्षता में कर लिया गया और वहाँ पर एक लैफ्टिनेण्ट गवरनर जनरल नियुक्त किया गया। लैफ्टिनेण्ट गवरनर जनरल की अध्यक्षता में एक शासक कौंसिल रक्खा जिसके ८ सरकारी तथा एक गैर सरकारी सदस्य थे। यहां एक कानून बनाने वाली सभा भी थी। कानून बनाने वाली सभा में शासक कौंसिल के सदस्यों के अतिरिक्त पांच और गैर सरकारी सदस्य थे। न्यूगिनी में ८ मजिस्ट्रेटों वाले ज़िले हैं। मोरेस्बी बन्दर-

गाह में एक केन्द्रीय कचहरी है। केन्द्रीय कचहरी की अपील न्यूगिनी कामन वेल्थ के हाई कोर्ट में होती है। स्थानीय नियमों के पालन कराने के लिये गाँवों में १०२४ पुलिस कान्स्टेबुल हैं। लगभग १ लाख ६० हज़ार एकड़ भूमि ठीके तथा पट्टे पर उठाई गई है जहां पौदे लगाये जाते हैं और ६२ हजार एकड़ से अधिक भूमि में नारियल, रबर और सीसल के वृक्ष उगाये जाते हैं। न्यूगिनी में भूमि के ज़रखरीद की मनाही है। न्यूगिनी के निवासी योरुपीय लोगों की देखभाल में खेती कर सकते हैं परन्तु उन्हें कर मुद्रा रूप में चुकाना पड़ता है। यहां की सालाना आय ४० लाख और व्यय ३० लाख रुपया है। आय और व्यय प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है। यहां के मुख्य बन्दरगाह मोरेस्बी समराई, कुलुमाडायु और डारू हैं। इन बन्दरगाहों से प्रति वर्ष लगभग ७५ लाख रुपये का आयात् और एक करोड़ पांच लाख रुपये का निर्यात होता है। निर्यात में बढ़ती हो रही है। मोरेस्बी बन्दरगाह के समीप तांबा निकाला जाता है १९२६ ई० में लगभग २० लाख रुपये का तांबा विदेश भेजा गया था। उसी वर्ष लगभग
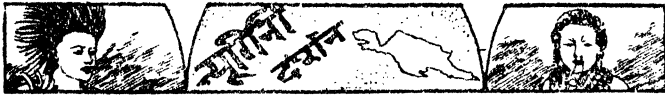
२६ लाख रुपये का रबड़ और लगभग ३० लाख रुपये की गरी (खोपरा) बाहर भेजी गई थी।

न्यूगिनी का मैराडेटेड राज्य

दक्षिणी-पूर्वी न्यूगिनी का उत्तरी भाग (जिसे पहले कैसर विलियम्स लैराड कहते थे) १६१६ ई० में राष्ट्र संघ द्वारा बिस्मार्क द्वीपसमूह और साल्मन द्वीपसमूह तथा आस्ट्रेलिया की कामन वेल्थ के साथ मैराडेट द्वारा मिला दिया गया। १८८४ ई० में यह भाग जर्मन संरक्षता में घोषित किया गया था। उस समय वहां एक भी मनुष्य स्वेत जाति का न था। उसके पश्चात् वहां बस्तियां बसाई गईं और खेती भी आरम्भ की गई। बस्ती बसाने का काम तीन जर्मन प्रचारक संस्थाओं ने किया था। अब वहां १८ जिलों में ८ प्रचारक संस्थाएँ ६०३ स्टेशन बना कर कार्य कर रही हैं। वहाँ मैराडेट नियम के अन्तर्गत देशी सरदार शासन करते हैं। वहां का शासक जब आस्ट्रेलिया के गवरनर जनरल को कानून के सम्बन्ध में सलाह देता है तो गवरनर जनरल सरकारी घोषणा के रूप में अपना

हुक्म जारी करता है। वहां १० जिलों के अफसर हैं जिनमें से ६ टापुओं में हैं। इसकी राजधानी राबौल है। इस प्रदेश में गुलामी अथवा बेगार प्रथा नहीं है परन्तु कोई भी मजदूर मैंएडेटेड प्रदेश के बाहर नहीं जा सकता है। देशी प्रजा को कोई व्यक्ति बंदूक, तोप, अस्त्र-शस्त्र, मदिरा, अफीम आदि नशीली वस्तुएँ नहीं पहुँचा सकता है। यहां के देशी पुलिस विभाग में ४६० पुलिस कान्स्टेबुल और १२ अफसर हैं। मज़दूर शर्तें लिखा कर रक्खे जाते हैं और फिर वह अपनी नौकरी नहीं छोड़ सकते हैं।

इस भाग की जनसंख्या ३,७८,७०२ है। शर्तें लिख कर काम करने वालों की गणना इसमें नहीं है। वह संख्या में २३,४२१ हैं। इस जनसंख्या में से १,८७,०११ मनुष्य न्यूगिनी के मैंडेट प्रदेश में रहते हैं। विदेशी लोगों की संख्या ३,०४५ है जिसमें १,३०३ चीनी, ६४४ ब्रिटिश और ३१० जर्मन हैं। मैंडेटेड भूमि का क्षेत्रफल ६८,५०० वर्गमील है। १,१३,४८१ एकड़ भूमि में नारियल, २,४७८ एकड़ में रबर की खेती होती है। नारियल के वृक्षों के मध्य कोको के वृक्ष भी लगाये

जाते हैं। ५५,४६० एकड़ नारियल और थोड़ी खेती रबर तथा कोको की स्वतंत्र रूप से की जाती है। यहां से १६२५ ई० में १ करोड़ २६ लाख रुपये का निर्यात और ८१ लाख रुपये का आयात हुआ था।

डच न्यूगिनी

डच न्यूगिनी न्यूगिनी का पश्चिमी अर्ध भाग है। डच और ब्रिटिश न्यूगिनी की सीमा वर्धक लाइन दक्षिणी तट से आरम्भ होती है और १४१ पूर्वी देशान्तर पर फ्लाई नदी से मिल जाती है। उसके बाद फ्लाई नदी और फिर १४१ पूर्वी देशान्तर रेखा सीमा बनाती है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल १५१७८६ वर्ग मील और जन संख्या लगभग दो लाख है। जिसमें से २३७ व्यक्ति योरुपियन या यूरेशियन हैं।

धुर पश्चिम सेराम के सामने का भाग और उत्तरी तट के कुछ भागों को छोड़ कर समस्त भाग निर्जन तथा उजाड़ पड़ा है। अभी तक इसके सभी भागों की खोज तक नहीं हुई है। उत्तरी भाग मुख्यतः पहाड़ी है परन्तु उत्तरी तट का कुछ भाग और माम्बेरामो नदी के दोनों

तटों का भाग कछारी है धुर पश्चिमी भाग बड़ा पहाड़ी है। दक्षिणी भाग बड़ा चपटा है। इस भाग में दलदल तथा बन हैं। मक्लेश्वर खाड़ी डच गिनी को लगभग दो भागों में बांटती है। इस खाड़ी में कई नदियां गिरती हैं। इनमें सेल्जार और केटेरो नदियां भी हैं। सेल्जार नदी में ३४ मील तक और केटेरा में २३ मील तक छोटे छोटे जहाज चल सकते हैं। दक्षिणी-पश्चिमी तट पर उत्तर से दक्षिण को मिमिका, युताक्वा, उत्तरी-पश्चिमी नदी, लोरञ्ज युतुम्बवे, ईलोडेन, डिगूल और मेराके आदि नदियां बहती हैं। इनमें से कुछ नदियां एक दूसरे से इतनी समीप हैं कि वह छोटी खाड़ियों द्वारा मिली हैं और उनमें छोटी नावें चलती हैं। कुछ नदियों में २५ से ५० मील तक स्टीमर चलते हैं। डिगूल नदी सबसे बड़ी है और मुहाने पर उसकी चौड़ाई ६ मील है। इस नदी में एक स्टीमर ४ सौ मील तक ऊपर की ओर गया था।

दक्षिणी पश्चिमी तट चपटा और समतल है। चार्ल्स लूई पर्वत के पास यह भाग ऊँचा हो जाता है। यहां नाटिलस प्रणाली पहाड़ियों के मध्य अधिक भीतर की

ओर प्रवेश कर गई हैं। मनोकाकारी के समीप अर्फाक पर्वत पर बड़ी गलिंवक खाड़ी ऊँची है इस खाड़ी का तट सार्मी स्थान तक नीचा चपटा और कछारी है पर यहां से हम्बोल्ट खाड़ी तक पहाड़ी और ऊँचा नीचा है।

ग्रेटगीलिंवक खाड़ी के प्रवेश द्वार पर कई एक टापू हैं जिनमें धुर उत्तर की ओर स्चाडेटन, पश्चिम में सकया सुरिओरी और पूर्व की ओर वियाक या कियाक द्वीप है। यह द्वीप पहाड़ी है। खाड़ी के भीतर जोबी या जोपन द्वीप है जो ११० मील लम्बा और १५ मील चौड़ा है। इसके बीच में एक पहाड़ी श्रेणी है जिसकी ऊँचाई २५ सौ फुट है। सेराम और डच न्यूगिनी के उत्तरी-पश्चिमी तट के बीच मिसोल टापू हैं जो ५० मील लम्बा और २३ मील चौड़ा है। यह उत्तर की ओर चपटा और दक्षिण की ओर पहाड़ी है। उत्तरी-पश्चिमी तट से गलेओ प्रणाली द्वारा अलग साल्वानी द्वीप है जो गोलाकार है। साल्वानी के पूर्व की ओर बारन्टा टापू है जो साल्वानी से पिट प्रणाली द्वारा अलग है। इस टापू की लम्बाई ४० मील और चौड़ाई लगभग ५ मील है। बताना द्वीप के उत्तर वैज्योयु द्वीप ८० मील लम्बा और

२८ मील चौड़ा है। यह टापू न्यूगिनी से डैम्पीर प्रणाली द्वारा अलग है। इस टापू में सघन बन हैं।

डच न्यूगिनी में किसी प्रकार का रोज़गार अथवा व्यापार नहीं होता है। वहां के निवासी जंगली हैं और मनुष्यों का शिकार करते हैं। यह लोग साबूदाना, नारियल, ईख, केला, पायामा और तम्बाकू की उपज करते हैं। साबूदाना अधिक खाया जाता है। स्वर्गीय पत्ती सुअर और कागरू का शिकार यहां के निवासी मांस के लिये करते हैं। पुरुष तथा स्त्रियां नंगे बदन घूमा करते हैं। मर्द धनुष बाण, पत्थर की कुल्हाड़ी और घड़ियाल के जबड़े की हड्डी की छूरियों से लैस रहते हैं। गांवों में मुखियां हैं पर उनकी शक्ति अधिक नहीं है। तटीय, भीतरी तथा पहाड़ी निवासियों में आपस में बैर-भाव रहता है और वह लड़ा करते हैं। उनकी भाषा में बहुत कुछ अन्तर है। डच अफसरों की बस्तियों को छोड़ कर और कहीं भी सड़कें नहीं हैं।

दक्षिणी न्यूगिनी में केवल एक बस्ती मेरौके है जो मेरौके नदी पर है। वहां पर एक डच अफसर रहता है।

वहां एक छोटा किला, एक अस्पताल, एक कैथलिक

गिरजाघर, कुछ बस्ती और कुछ चीनी सौदागरों की दुकानें और एक घाट है। घाट पर डच स्टीमर सवारी उतारते हैं और नारियल आदि एकत्रित करते हैं।

मेरौके बस्ती की स्थापना १६०२ ई० में हुई थी मेरौके के समीप मक्ल्वेर खाड़ी पर कैमाना, कोकास, फाक फाक स्थानों में डच अफसर हैं और वहां मलय, चीनी और अरब लोगों के छोटे छोटे व्यापारिक केन्द्र हैं। कैमाना, कोकास फाक फाक और सोरोंग बन्दरगाह हैं जहां डच तथा दूसरे जहाज आकर ठहरते हैं। मानों कवाड़ी नगर उत्तरी-पूर्वी तट पर है यहां सहायक रेज़ीडेण्ट रहता है और यह उत्तरी न्यूगिनी की राजधानी है।

वैसिओर का बन्दरगाह गीलिंवक की छोटी खाड़ी पर है। सार्मी डेम्टा, और हम्बोल्ट में भी जहाज ठहरते हैं और मलय, चीनी तथा अरब लोगों की दूकाने हैं। सेरोई, अई, बाई के बन्दरगाह जापेन द्वीप में हैं। स्चाउटेन द्वीप में बोस्निक बन्दरगाह है। उत्तरी न्यूगिनी की अपेक्षा दक्षिणी डच न्यूगिनी की उन्नति शीघ्र हो जावेगी क्योंकि वहां की भूमि अच्छी तथा उपजाऊ है।

१६६० ई० में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी तथा न्यूगिनी की तीन रियासतों टर्नेट, टिडोरे और बाचियन में संधि हुई थी जिसके अनुसार इन राज्यों में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी को अपना राजा स्वीकार कर लिया था। इस संधि के अनुसार डच लोग वैज़योयु साल्वानी और मिसोल टापू के राजा बन गये। १८२८ ई० में फोर्ट डे बस बनाया गया। उसी समय प्रथम डच बस्ती यहां बसाई गई परन्तु इससे पहले १८१४ ई० में न्यूगिनी के उत्तरी पश्चिमी भाग में डच लोगों का शासन स्वीकार किया जा चुका था। इसलिये १८०३ ई० के पूर्व से ही वहां डच बस्तियां स्थापित हो चुकी थीं। १८२८ ई० में डच सरकार ने घोषणा की कि न्यूगिनी का उत्तरी पश्चिमी भाग डच ईस्ट इंडियन उपनिवेश का एक भाग है। १९१० ई० में पश्चिमी न्यूगिनी अम्बोयना की रेजीडेन्सी में मिला दिया गया। इस समय डच न्यूगिनी उत्तरी न्यूगिनी और दक्षिणी पश्चिमी न्यूगिनी में बँटा है।

वर्ण इतिहास

यद्यपि न्यूगिनी में कई वर्ण के लोग पाये जाते हैं तो भी अधिकांश लोग युलोट्रिचोस (बिखरे बाल वाले) मानव-वर्ण का है। वहां के भिन्न भिन्न वर्ण नेग्रीटो पाप्वान्स और मेलानीसियन हैं। नेग्रीटोस वर्ण के जो टैपिरो लोग न्यूगिनी में पाये जाते हैं वह मिमिका नदी के उद्गम स्थान डच न्यूगिनी के स्नो पर्वत और पेसेचेम में रहते हैं। मफूलू, काई और कुछ दूसरी जातियों में नेग्रीटो वर्ण के लोग पाए जाते हैं।

न्यूगिनी में सबसे अधिक पाप्वान वर्ण के लोग हैं जिनका रंग काला-छोटा क़द और सिर लम्बा होता है। पाप्वान वर्ण के लोगों ने प्राचीन काल में ही न्यूगिनी मेलानेसिया में बस गये थे। उसके बाद इण्डो-नेशिया से आकर लोग बसे जिनका प्रभाव सांस्कृतिक तो अधिक पड़ा परन्तु वर्ण सम्बन्धी कम पड़ा। पाप्वान में मेलानेसियन, प्रोटो-मलय और इण्डोनेसियन वर्णों का मिश्रण है। मेलानेसियन वर्ण का प्रभुत्व उत्तर और

उत्तरी-पूर्वी तटीय प्रान्त में अधिक है। पापुआ के दक्षिणी-पूर्वी तट पर मेलानीसियन वर्ण के चिन्ह साफ साफ देखे जा सकते हैं।

प्रधान जातियाँ

न्यूगिनी के टोरेस प्रणाली के द्वीप सभ्य तथा उन्नतशील हैं। फ्लाई नदी और डच न्यूगिनी की सीमा के मध्य तुगेरी और किवेस जातियां रहती हैं। स्ट्रिकलैंड और फ़्लाई नदी के मध्य मूरे झील के पास पड़ोस में जो निवासी रहते हैं उनकी सभ्यता का ठीक ठीक पता नहीं है। फ्लाई और आरामिया के मध्य गोगोडारा जाति निवास करती है। पाप्वा की खाड़ी में किकोरी नदी के कुछ पश्चिम से केप पाजीशन तक में केरेवा, मुरामा, नामायु और एलेमा जातियाँ निवास करती हैं। सेन्ट ज़ोज़फ नदी के पास मफूलू जाति रहती है जिसके रीत-रिवाज बड़े अद्भुत हैं। पापुआ ज़िलों के पूर्व मेलानेसियन भाषा बोलने वाले रहते हैं। इनकी दो प्रधान शाखायें हैं। १—पापुओ मेलानीशियन जिसमें रोरो, मोतू, मेकेओ

आदि जातियां हैं। पूर्वी पापुओ मेलानेसिया या मासिम जाति न्यूगिनी के पूर्वी कोने पर रहती है जिसमें लोर्ड स्याडीज़ के समस्त द्वीप शामिल हैं। सेसेल द्वीप में मेलानेसियन भाषा नहीं बोली जाती है। पापुवन भाषा बोलने वालों की उन्नति हो रही है।

न्यूगिनी में बुकावा, हुओम खाड़ी और जाविन आदि की सभ्यता मेलानीसियन है। समीपवर्ती द्वीपों के तामी लोगों की भाषा शुद्ध मेलानेसियन है। रविल्सन और स्टेटेलबर्ट की पहाड़ियों में काई जाति रहती है। अधिक उत्तर और पश्चिम की ओर पापूअन और मेलानेशियन दोनों भाषाओं के बोलने वाले रहते हैं। सेपिक नदी और केराम नदी के निवासी भी कुछ सभ्य हैं।

डच न्यूगिनी में गील्विक खाड़ी में मेलानेसियन भाषा बोलने वाली जाति रहती थी। मिमिका नदी के ऊपर की ओर तपीरो लोग रहते हैं।

रहने सहने के साधन

न्यूगिनी के निवासी नारियल, साबूदाना, केला, तारो और याम की उपज करते हैं। मछली का शिकार भाले, कंटिया और जाल से किया जाता है। सुपाड़ी का प्रयोग भारतवर्ष की भाँति चूने और कत्थे के साथ किया जाता है। तम्बाकू का प्रयोग लगभग सभी लोग करते हैं। कावा नामक मदिरा प्रयोग की जाती है।

न्यूगिनी के निवास स्थान बहुत छोटे होते हैं और बहुधा लट्ठों अथवा ऊँचे स्थानों पर बनाये जाते हैं। कहीं कहीं बड़े बड़े गांवों की बस्तियां हैं और कहीं कहीं बिखरे हुये घरों की बस्तियां हैं। क्लब घर बहुत हैं। इन घरों में मर्द लोग अपने जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत कर देते हैं। यह क्लब घर बड़े बड़े होते हैं और सेपिक और पापुवान खाड़ी में बहुत हैं। नावों का प्रचार बहुत है। पापुओ मेलानेशियन लोगों के मध्य दोहरी नावें प्रचलित हैं। न्यूगिनी के निवासी कई एक नावों को जोड़ कर जहाज की भाँति एक बड़ी वस्तु बना लेते हैं जिसे मोतू कहते हैं। मर्द लोग पेटी और स्त्रियां पेटी-कोट
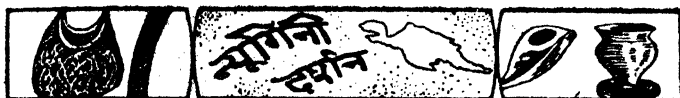
(साया) का प्रयोग अवश्य करती हैं। बहुधा यह वस्तुएँ नारियल आदि की बनी रहती हैं। बेंत, शंख और हड्डी के चूड़े और संख घोंघे, बीज, कुत्तों के दांत के हार (माले) पहिनने का रिवाज बहुत है। स्त्रियाँ भारतीय स्त्रियों की भाँति नाक के अगले भाग और कान की लहरों में सूराख रखती हैं और हड्डी की बालियों तथा गुरियों से उन्हें सजाती हैं। प्रायः सभी लोग गोदना गोदाते हैं पर स्त्रियाँ अधिक गोदाती हैं और भांति भांति के चित्रों से अपने शरीर को सुसज्जित करती हैं।

न्यूगिनी के निवासी लकड़ी तथा पत्थर के सामान बहुत अच्छे तयार करते हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने का काम भी अच्छा होता है। गाने बजाने का मुख्य साधन ढोल और नगाड़े हैं। बांसुरी और लकड़ी के डमरू आदि बाजे भी काफी प्रचलित हैं।

सामाजिक संगठन

न्यूगिनी के मानव समाज में यद्यपि कुटुम्ब जीवन की प्रधानता है तो भी वंश की महत्ता उससे बड़ी है। रिश्तेदारों और सम्बन्धियों के लिये भिन्न भिन्न शब्द प्रयोग किये जाते हैं। इन शब्दों की बनावट नियम बद्ध संगठित रूप से है। जब तक उसका ठीक रूप से अध्ययन नहीं किया जाता तब तक न्यूगिनी के कुटुम्ब वंशावली का समझना कठिन है। वंशावली के नातेदारों के लिये बहुत थोड़े शब्द प्रयोग होते हैं। एक ही वंश के लोग भाई बहिन समझे जाते हैं। मातृ वंश और पितृवंश दो प्रकार के कुटुम्ब न्यूगिनी में अधिक हैं। पापुआ के मासिम ज़िले में मातृ वंश के कुटुम्बों की अधिकता है। मासिम के कुटुम्ब के प्राणी लोग अपने को पशु, वृक्ष पक्षी, मछली और सांप से उत्पन्न हुआ मानते हैं। इसी कारण वह जिस पक्षी से अपनी उत्पत्ति मानते हैं उसका मांस नहीं खाते हैं।

पूर्व की ओर वंश की महत्ता बहुत है। मृत्यु, ब्याह, निमंत्रण, खेल, तमाशे और दूसरे रीत-रिवाजों में वंश

पापुवा प्रान्त की एक स्त्री अपने हड्डी और शंख के आभूषणों सहित ।

शंख का बर्तन

न्यूगिनी का विचित्र निवासी ।

मानव भक्षण करने व रात में घूमने वाली जाति का एक मनुष्य ।

पापुवा का नृत्यक अपने विशाल सिर-पहिनाव सहित ।
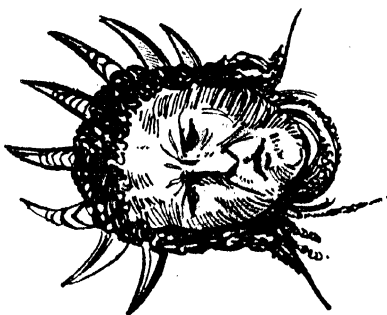
को अधिक महत्व दिया जाता है। बंश के ही आधार पर निमंत्रण तथा शादियां होती हैं। यदि एक बंश के लोग किसी दूसरे बंश के किसी मनुष्य को अचानक मार डालते हैं तो फिर मरने वाले मनुष्य के बंश के लोग मारने वाले बंश के किसी न किसी मनुष्य को मार कर अवश्य बदला चुकाते हैं यह प्रथा अब भी प्रचलित है।

न्यूगिनी के निवासियों के मध्य भारतवर्ष की भांति वर्ण संस्कारों का होना बड़ा ही आवश्यक है। वर्ण संस्कारों का आरम्भ आठ वर्ष की अवस्था में होता है। संस्कार क्लब घर में किये जाते हैं वहां पर उसे सांड़ की गरज सर्व प्रथम सुनाई और दिखाई जाती है। इस संस्कार में पास पड़ोस के गांवों के निवासी और नहीं तो कम से कम एक गांव के निवासी अवश्य भाग लेते हैं। दो तीन वर्ष के अन्दर सभी संस्कार समाप्त हो जाते हैं।

देश दर्शन

धर्म

पितृ पूजा समस्त न्यूगिनी में होती है। पूर्वी पापुवा प्रदेश के निवासी एक साथ संगठित होकर अपने पित्रों की पूजा करते हैं और उस समय एक बड़ा भारी भोज होता है। जिसमें समस्त वर्ण के लोग सम्मिलित होते हैं। प्राचीन काल में जितने भी प्रसिद्ध व्यक्ति हुये हैं और जिन्होंने प्रशंसनीय .कार्य किये हैं वे सभी पूजे जाते हैं। पितृ लोगों की पूजा देवता मान कर की जाती है। मासिम प्रदेश में प्रकृति की शक्तियों को देवी देवता मान कर पूजा होती है। एलेमा जाति के लोग अपने पित्रों का वही नाम रखते हैं जो वह किसी पवित्र वस्तु तथा देवता का रखते हैं। इस प्रकार वह अपने पूर्वजों को देव मान कर ही पूजते हैं।

न्यूगिनी के निवासियों का साधारण रूप से विश्वास है कि मनुष्य की मृत्यु जादू अथवा भूत पिशाचों के कारण होती है और जादू मारने वाले बड़ी दया के साथ जादू का प्रयोग करते हैं। इसी कारण बीमार मनुष्य को कष्ट कम होता है। बीमारी से अच्छा करने

के लिये झाड़-फूंक और ओझाई की प्रथा प्रचलित है। रेसेल द्वीप के निवासियों का विश्वास है कि यदि कोई मनुष्य बीमार पड़ता है तो उसका अर्थ यह है कि उसने अवश्य ही किसी देवता के शुद्ध स्थान को अशुद्ध बनाया है।

जहां कहीं ईसाई बस्तियां स्थापित हैं वहाँ ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती है। रोमन कैथलिक चर्चों की अधिकता है।

संक्षिप्त इतिहास

सन् १५२६ ई० में डोम जार्ज डे मेनेसेस नामक व्यक्ति इस्ला डे वेर्सीजा के वेसिंया या वैगिए द्वीप में उतरा था उसके दो वर्ष के पश्चात् अल्वारो डे सावेद्रा ने चाउटेन के इस्लाडे ओरो का पता लगाया और उत्तरी तट की ओर चला गया। यूनिगो ओरिज़ डे रेटेज़ न्यूगिनी के उत्तरी तट पर १५४६ ई० में उतरा और सोचा कि वहां के निवासी पश्चिमी अफ्रीका के निवासियों से मिलते जुलते हैं। वही नोवागिनी नाम का जन्मदाता है। १५८० ई० में आर्टेलियस ने नोवागिनी के द्वीप का वर्णन अपने चार्ट में किया था।

सन् १६०५ ई० से १८२० ई० तक न्यूगिनी के भिन्न भिन्न भागों की खोज डच, जर्मन और अँग्रेज़ खोज करने वाले करते रहे और उसके भिम्न भागों पर अधिकार जमाते रहे।

१७९३ ई० में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया और मौंसवारी टापू में एक किला बनाया गया। उसके बाद टिडोर के बादशाह का राज्य होने के कारण १८४८ ई० के बाद डच लोगों ने उत्तरी तट पर हम्बोल्ट खाड़ी तक अपना अधि-

कार बतलाया। १८२८ ई० में डच लोगों ने ट्रीटन खाड़ी में एक बन्दरगाह स्थापित किया और १४१ अंश पूर्वी देशान्तर तक अपना अधिकार जमाया। १८८५ ई० में डच लोगों का अधिकार पश्चिमी भाग में ब्रिटिश तथा जर्मन सरकार द्वारा स्वीकार किया गया। १६०५ ई० में टिडोर के राजा ने अपना अधिकार वहाँ की सरकार को सौंप दिया।

१८६४ ई० में यूले ने दक्षिणी तट को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया और १८७३ ई० में मोरेस्बी ने पूर्वी न्यूगिनी के टापुओं पर अधिकार कर लिया क्योंकि यदि उन द्वीपों पर किसी विदेशी सरकार का अधिकार हो जाता तो क्वींसलैंड और आस्ट्रेलिया के व्यापार को भय उत्पन्न हो जाता। १८८३ ई० में क्वोन्सलैंड की सरकार ने अपने तट के सामने के समस्त प्रदेश पर अधिकार कर लिया परन्तु यूले और मोरेस्बी के अधिकार करने के कारण इङ्गलैंड की सरकार ने क्वींसलैंड द्वारा मिलाये जाने वाले प्रदेश की स्वीकृति नहीं दी। १८८४ ई० में जर्मन सरकार ने उत्तरी-पूर्वी तट और समीपवर्ती द्वीपों पर अधिकार कर लिया

और कमोडेरे एर्काइन ने घोषणा की कि १४१° देशान्तर का पूर्वी प्रदेश पूर्वी अन्तरीप तक और कोस्मान द्वीप तक के सभी द्वीप ब्रिटिश संरक्षता में कर लिये गये हैं। १८८५ ई० में जर्मन न्यूगिनी को जर्मन सरकार की ओर से चार्टर दिया गया कि जिन प्रदेशों पर डच अथवा ब्रिटिश अधिकार नहीं हैं वहाँ जर्मन अधिकार कर लिया जावे और न्यूगिनी के जर्मन भाग का नाम कैसर विलियम्स लैंड और द्वीपों का बिस्मार्क द्वीपसमूह रक्खा जावे। उसी साल सीमाएँ बनाई गईं और ब्रिटिश द्वारा अधिकार की हुई भूमि संरक्षता से हटा कर साम्राज्य में शामिल कर लिया गया और १९०६ ई० में उसका नाम पापुवा रक्खा गया। १८८९ ई० में जर्मन न्यूगिनी ने अपना चार्टर जर्मन सरकार को दे दिया और वहाँ पर जर्मन सरकार का शासन स्थापित कर दिया गया। १९१४ ई० के युद्ध के बाद जर्मन भूमि पर आस्ट्रेलियन सरकार का अधिकार हो गया और अब वहां का शासन आस्ट्रेलिया की सरकार राष्ट्र संघ के मैंडेट के अनुसार करती है।

निवासी

न्यूगिनी के गाँव

न्यूगिनी के निवासी छोटे छोटे गांवों में रहते हैं। प्रायः एक गांव में एक ही वर्ण के लोग रहते हैं। उनके रहने के झोंपड़े बड़े सीधे सादे जंगली होते हैं। घरों में द्वार अथवा खिड़कियां नहीं होती हैं। द्वार प्रायः एक चौकोर सूराख की भांति एक ही होता है। छतें घास फूस की और दीवारें पत्थर तथा मिट्टी की रहती हैं।

गांव के रहने वाले बड़े खुशदिल होते हैं और आनन्द पूर्वक अपने कामों में व्यस्त रहते हैं। कहीं कहीं बेकार बैठा हुआ ग्राम्य निवासी देखने को मिल सकता है परन्तु प्रायः वह सदैव कुछ न कुछ काम करता ही रहता है। गांव वालों को बहुत से काम करने को होते हैं। काम करने के लिये उनके पास काफी समय भी रहता है। वह बातें करते तथा हँसते हुये काम करते हैं।

नावों के बनाने, जाल तयार करने, घरों के बनाने और मरम्मत करने, डांड़-पतवार बनाने और भालों को तेज़ करने, मिट्टी के बरतन बनाने और कपड़ा बुनने तयार करने, साबूदाना तयार करने। बगीचों के लिये

नई धरती बनाने आदि कामों के लिये यहां के निवासी भिन्न भिन्न समय रखते हैं। वह उस काम की ऋतु आने पर ही वह काम करते हैं। मछली मारना, शिकार करना और व्यापार के लिये तटों की यात्रा करना, आदि सभी कुछ ऋतु आने पर ही होता है। उनमें सुस्ती का नाम भी नहीं है। वह समय समय पर तमाशे नाच-गान आदि में भी भाग लेते हैं और रात-रात तथा दिन-दिन भर गाने-बजाने या भोज में लगे रहते हैं।

न्यूगिनी के प्रत्येक निवासी को स्वयम् अपनी रोटी और वस्त्र के लिये काम करना पड़ता है इसलिये वहां गुण्डे और बेकार रहने वालों की संख्या बहुत कम है। वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि यदि वह काम नहीं करेगा तो उसे फिर भोजन तथा वस्त्र मिलना कठिन हो जावेगा।

न्यूगिनी के निवासी को अपने निर्वाह से अधिक काम नहीं करना पड़ता है क्योंकि उसकी आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं और उसे अपने या दूसरे के धनवान बनने के लिये काम नहीं करना पड़ता है। वहाँ की सभ्यता भी ऐसी नहीं है कि लोगों की आवश्यक-

नारियल के रेशों से जाल तयार करना।

कोमे में चटाई बनाने का रोज़गार।

मनुष्य-भक्षण करने वाली जाति की मनुष्य-खोपड़ी
रक्खी जाने वाली आल्मारी

हड्डी का हार

ताएँ बढ़ सकें और फिर उनकी पूर्ति के लिये अधिक काम करना पड़े। प्रति दिन कुछ घंटे काम करने से ही वह अपने लिये सुन्दर घर बना सकता है, पेट भर भोजन खा सकता है और आवश्यक कपड़े प्राप्त कर सकता है। न्यूगिनी की जलवायु ऐसी है कि लोगों को अधिक कपड़े पहिनने की आवश्यकता नहीं है।

भारतीय स्त्रियों की भांति न्यूगिनी की स्त्रियां बड़े प्रातः काल उठकर अपने घर-द्वार और आस पास झाड़ू लगाती हैं। वह टहनियों के झाड़ू बनाती हैं। दिन में भी यदि आवश्यकता प्रतीत हुई तो स्त्रियां या लड़कियां झाड़ू से गर्द पुनः साफ कर देती हैं। इतना होने पर भी गांव की गलियां साफ नहीं रहती हैं। गलियों की ठीक सफाई सरकारी नौकरों के आने पर ही की जाती है। उस समय वह अपनी गलियां, घर द्वार सभी ठीक तौर पर रखती हैं।

सूर्योदय के बाद ही घर के सभी मर्द तथा स्त्रियां अपने अपने कामों पर चले जाते हैं। उसके बाद गाँव में बूढ़े और बच्चों के सिवा कोई नहीं दिखलाई पड़ता है। वृद्ध अग्नि के समीप मैले कुचैले वस्त्र पहिने खांसते रहते

हैं। दुबले-पतले कुत्ते बैठे ऊँघाते रहते हैं और काले सुअर बैठे अथवा घूमते दिखाई पड़ते हैं। न्यूगिनी के सुअर बड़े फुर्तीले होते हैं। उनकी आखें डरावनी होती हैं। उनका पिछला भाग अधिक भारी तथा तगड़ा होता है। स्त्रियाँ बरामदों में बैठी शहतूत की छाल मोंगरी से पीटती हैं और फिर उसी के रेशे से कपड़ा तयार किया जाता है। शहतूत के रेशों का कपड़ा न्यूगिनी निवासी पहिनते हैं। यह कपड़े काले अथवा लाल रंगों से छापे जाते हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने का काम भी अधिकतर स्त्रियां ही करती हैं। वह बड़े सुन्दर बर्तन तयार करती हैं।

छोटे बच्चे जो स्कूल में पढ़ने नहीं जाते हैं वह बाहर धूप में खेला करते हैं। वह डोर, नारियल के खोपड़े, हड्डियां, फूल और टूटे हुये बर्तनों की सहायता से अपने खेल खेलते हैं। अधिक छोटे बच्चे डोर के बने बोरों के पलने पर बरामदों में पड़े सोते रहते हैं। बीच बीच में उनका पलना (झूला) झुला दिया जाता है जो कि एक बार झुलाने से काफी समय तक झूलता रहता है। न्यूगिनी के छोटे बच्चे बहुत कम रोते अथवा चिल्लाते हैं। वह बीमारी की अवस्था में ही रोते हैं।

दोपहर के बाद मर्द, स्त्रियां और बड़े बच्चे जो बाहर काम करने जाते हैं घर लौटते हैं। स्त्रियां लकड़ियों के गट्ठे लेकर आती हैं। कोई पानी लाता है तो कोई मांस लेकर आता है। बच्चे घोंघे, सीप, (सूती) केकड़े आदि ले आते हैं। प्रत्येक कुटुम्ब के लोग खुले मैदान में भोजन तयार करने के लिये आग जलाता है। उनके मिट्टी के बर्तनों में तारो, केला, आलू, और दूसरी जंगली जड़ें तथा फल भरे रहते हैं। तारो का पौदा उगने पर कमलनी की भांति होता है। उसी पौदे की जड़ पका कर खाई जाती है। पकने पर वह मैली हो जाती है। उसका मज़ा सूखी फीकी शकरकन्द की भांति होता है। न्यूगिनी के निवासी जो कुछ भी पाते हैं उसी को भोजन के लिये प्रयोग कर लेते हैं। बच्चे पानी से उड़ती मछलियाँ, घड़ियाल और कछुए के अंडे, चिड़िया आदि पकड़ कर ले आते हैं।

अंधेरा होने के पहले घर के सभी प्राणी दिन भर के बाद एक बार ठीक तौर पर भोजन करने के लिये एकत्रित होते हैं। भोजन करने में उन्हें काफी समय रहता है। भोजन के पश्चात् उन्हें बर्तन साफ करने को

बहुत कम तकलीफ उठानी पड़ती है। उबालने तथा पानी पीने वाले बर्तन बालू से रगड़ कर सोते, झरने या समुद्र में धो लिये जाते हैं। भोजन पत्तियों पर कर लिया जाता है जो उठा कर फेंक दी जाती हैं। अँधेरा हो जाने के बाद घर के मर्द गांव में बातचीत करने के लिये एक दूसरे के पास जाते हैं। बच्चे अपने खेलों में लग जाते हैं। वहां लालटेन या दीवे नहीं जलाये जाते। यदि रोशनी का काम हुआ तो घास फूस जला कर काम चला लिया जाता है। बूढ़े बहुधा तम्बाकू पीने के लिये आग जलाते हैं। यदि उजाली रात होती है या गरमी अधिक पड़ती रहती है तो लोग १० या ग्यारह बजे तक बात-चीत करते, हँसते, गाते बजाते और नाचते रहते हैं और यदि जाड़े या वर्षा की रात हुई तो आठ बजे तक वह चारपाई पर सोने के लिये चले जाते हैं। रात को बहुधा चिल्लाहट जाती है। किसी की बीमारी के कारण सभी लोग घबड़ा उठते हैं या किसी बृद्ध के खांसने या कहरने से गांव के लोग जाग जाते हैं।

बीमारी

न्यूगिनी के निवासियों का विश्वास है कि जब लोग रोग ग्रसित होते हैं तो उन्हें कोई न कोई दुष्ट आत्मा अवश्य मनुष्य के शरीर पर छाया करती है। दुष्ट आत्मा को वह "डायु" नामक शब्द से पुकारते हैं। यह डायु भूत पिशाच, चुड़ैल, राक्षस आदि होती है न्यूगिनी में बीमारियाँ बहुत कम होती हैं। अधिकतर लोगों को जुकाम की बीमारी होती है या चोट लग जाने से घाव बढ़ जाता है और फिर दूसरी बीमारियां हो जाती हैं। अधिक भोजन करने से भी बीमारी उत्पन्न हो जाती है। चर्म रोग भी अधिक होते हैं। चर्म रोग से न्यूगिनी में "मोरोले" कहते हैं। फोड़ा फुन्सी और छाले को "गिगीरा" नाम से पुकारते हैं। औषधि को "कियो" कहा जाता है।

जब कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है तो फिर उसका जीवित रहना कठिन हो जाता है क्योंकि उनका विश्वास होता है कि उसे दुष्ट आत्मा ने पकड़ लिया है और वह अवश्य ही मर जावेगा। दुष्ट आत्मा को

झाड़-फूक कर निकालने का उपाय वहां के वैद्य लोग करते हैं। वैद्यों के उपाय से रोगी को बहुधा रोग से भी अधिक कष्ट होता है। रोगी के सम्बन्ध में नीचे कुछ कहानियां दी जाती हैं।

एक दिन एक गांव के एक झोपड़े में एक बच्चे की मृत्यु हो गई। उस दिन उस गांव में समस्त दिन रोना पीटना मचा रहा। सभी गांव वाले चुड़ैल के सम्बन्ध में भांति भांति की कहानी की कहानियां गा रहे थे और उस रात चुड़ैल के गांव में आने के चिन्ह बता रहे थे। जिस झोपड़े में बच्चे की मृत्यु हुई थी उसी के पड़ोस के एक दूसरे झोपड़े में एक बृद्धगत रात को लगभग १ बजे स्वास की बीमारी से खांस तथा कराह रहा था। गांव वालों का कहना था कि उस बृद्ध के कराहने के कारण चुड़ैल उसे लेने के लिये गांव में घुसी परन्तु गांव के पंडित ने एक बार उसे गाँव से भगाया वह पुनः आई और वृद्ध के समीप भीड़ देखकर वह अकेले पड़े बच्चे के पास गई और उसे मार डाला सचमुच बात यह थी कि वह बच्चा कुछ समय से बीमार था और बीमारी के कारण ही मरा था।
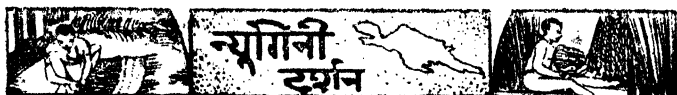
न्यूगिनी में आग जला कर कुछ तीखी और कडुई वस्तुएँ डाल कर लोग चुड़ैल या प्रेत (बीमारी) को दूर करते हैं। एक बार एक युवक बीमार हो गया शीघ्र ही उसकी बीमारी का समाचार समस्त गाँव में आ गया और लोग उसके पास देखने को आये। गांव के वैद्य अपना अपना इलाज करने लगे। तीखी वस्तुओं की धुँई ऐसी हुई कि वहाँ सांस लेना भी कठिन हो गया। जब वह युवक ठीक तौर पर सांस न ले सका तो चिल्लाने तथा उठ कर भागने लगा। वह जितना ही चिल्लाता अथवा उठ कर भागने का प्रयत्न करता उतना ही धुईं और बढ़ाई जाती और कहा जाता कि प्रेत अब उसे छोड़ कर भाग रहा है। आखिरकार वह बेहोश हो गया और बेहोशी की दशा में उसका शरीर शिथिल हो गया। शरीर शिथिल होने पर धुईं कम की गई। थोड़ी देर के पश्चात् उसे कुछ होश आई परन्तु वह बुझते दीवे की अंतिम लपट की भांति थी। वह रात भर पड़ा रहा। प्रातः काल उसका शरीर ठंडा था और प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

एक बार एक छोटी लड़की एक लटकती हुई डाली

से एक छोटे पानी के सोते में गिर पड़ी। लोगों ने समझा कि पानी में डूबने से मर गई है। उसे निकाल कर लोग उसके घर ले गये। उसकी दादी दौड़ी हुई आई और उसने उसे दोनों पैर पकड़ कर उठा लिया। लड़की का सिर नीचे की ओर दादी के पीठ के समीप था और दादी का सिर लड़की के पेट को खूब दबाया और झटके दिये। ऐसा करने से लड़की के पेट का सारा पानी नीचे गिर गया। उस लड़की का शरीर बिलकुल ठंडा हो रहा था इसलिये खूब आग जलाई गई और उसे गरमी दी गई। वह कुछ घंटे आग के पास लेटी रही उसके बाद वह फिर खेलने कूदने लगी।

न्यूगिनी के निवासी सदैव अपने औजारों से काट छाँट का काम करते रहते हैं इस कारण उन्हें चोट बहुधा लगती है। छोटी मोटी चोटों की वह तनिक भी परवाह नहीं करते। बहुधा उनके पैर में कुल्हाड़ी लग जाती है और वह उस घाव की परवाह न करके अपने कामों में लगे रहते हैं। घावों में वह जड़ी-बूटियों, वृक्षों की छाल और पत्तियों का प्रयोग करते हैं। यदि कुछ नही तो वह मिट्टी लगा देते हैं। बहुधा गंदी मिट्टी के लगा देने से

घाव बढ़ जाता है और कीड़े पड़ जाते हैं। फिर वहीं उसकी मृत्यु का कारण बन जाता है।

जब किसी के गहरी चोट लग जाती है तो वह अकेला नहीं छोड़ा जाता। उसके सम्बन्धी उसके पास अवश्य रहते हैं। यदि वह किसी अस्पताल में मरहम-पट्टी कराने के लिये जाता है तो कई एक सम्बन्धी तथा पड़ोसी उसके साथ जाते हैं जिससे मार्ग में प्रेत अथवा चुड़ैल की आत्मा झाड़ी से निकल कर उसके शरीर में प्रवेश न कर जावे।

परदेशी के साथ व्यवहार

न्यूगिनी के गाँव में जब कोई अजनबी व्यक्ति पहुंचता है तो उसे गाँव के निवासी कम से कम २० या २५ की संख्या में घेर लेते हैं। वह पशुवत् व्यवहार नहीं करते और परिचय होने पर बकरी का दूध पीने के लिये देते हैं। विदेशी मनुष्य को गाँवों में घूमने के लिये अपने साथ वहाँ के किसी व्यक्ति को मार्ग बतलाने या बातचीत करने कराने के लिये रखना पड़ता है।

परदेशी के आने की सूचना शीघ्र ही गाँव के सरदार को मिल जाती है। गाँव के सरदार बड़े उदार हृदय के होते हैं और वह जी खोल कर परदेशी से मिलते हैं परन्तु यदि उन्हें परदेशी पर किसी प्रकार का सन्देह हो गया तो फिर उनकी उदारता कठोरता में बदल जाती है। सरदार विदेशी को अपने झोंपड़े में ले जाकर ठहराता है और लड़कियों को आज्ञा प्रदान करता है कि वह पारखी लाकर आगन्तुक के पैर पखारें। हाथ मुँह धुलाने के पश्चात् अजनबी को बैठने के लिये चटाई बिछा दी जाती है और फिर उसे चावल, बन्दर

आदि का मांस, दूध और याम (एक प्रकार का फल) भोजन के लिये दिया जाता है। याम का प्रयोग आलू के स्थान पर अधिक होता है। जब तक अजनबी के साथ सरदार की जान पहिचान भली भांति नहीं हो जाती है वह उसके साथ भोजन करने से हिचकता है।

दोपहर को भोजन के पश्चात् शयन का रिवाज है और सभी धनी तथा मध्यम श्रेणी के लोग दोपहर को आराम करते हैं।

उनके चारपाई, बिस्तर, मेज-कुर्सी आदि कुछ नहीं होते। कहीं चटाइयाँ शय्या का काम देती हैं। सोते समय न्यूगिनी निवासियों के नाक तथा गले से खर्राटे की आवाज़ बड़े ज़ोर से निकलती है। आवाज़ प्रायः इतनी तीव्र होती है कि परदेशी के नींद आनी कठिन हो जाती है।

घर के भीतर बरतन, बटलोई, चटाई, चाकू और कुछ दूसरे हथियार के सिवा कुछ नहीं होता है। यह बर्तन अधिकांश मिट्टी के देशी और धातु के योरुपीय होते हैं। दीवारों पर प्रायः उन पशुओं के चमड़े टंगे रहते हैं जिनको सरदार अपने मांस के लिये शिकार

करके ले आता है। चमड़ा विदेश को भेजा जाता है। चीनी मिट्टी के सामान, बटन, हड्डी के सामान आदि अवश्य सरदारों के घर में बहुत रहते हैं। बच्चों के खेलने के लिये खिलौने भी बहुत रहते हैं। सरदार के दो या दो से अधिक स्त्रियाँ रहती हैं। स्त्रियों की अधिकता के कारण बच्चे भी अधिक रहते हैं। कैंची, पानी पीने के प्याले, फोर्क, कांटे, चाय के बर्तन, दर्पण, बोतलें और सुई डोरा आदि सामान भी सरदार के घर में रहता है। यह सामान दीवार के सहारे लकड़ी के तख्तों की बनी हुई आलमारी में रक्खा रहता है।

सरदार का झोंपड़ा प्रायः दो भागों में एक परदा द्वारा बंटा रहता है। भीतरी भाग में स्त्रियां और बाहरी में मर्द रहते हैं। सरदार के घर की स्त्रियाँ खुले तौर पर परदेशी के सामने नहीं आतीं वरन् ओट से उसे भली भांति देखने की कोशिश करती हैं

लगभग ३ बजे सायंकाल सरदार तथा उसके घर के प्राणी सोकर उठते हैं और यदि सरदार पहले उठ जाता है तो वह घर के दूसरे लोगों को पैर की हलकी ठोकरें देकर जगाता है।

उसके बाद नारियल के रस की तयार की हुई ताड़ी मंगाई जाती है। ताड़ी लाने का काम प्रायः घर की नौकरानी करती है। ताड़ी में थड्डा पत्ती (एक प्रकार के पौधे की पत्ती) डाल कर एक लकड़ी के डंडे से मथा जाता है। लगभग १२ घंटे के बाद ताड़ी पीने योग्य बनती है। ताड़ी परदेशी को भी पीने के लिये दी जाती है। यदि परदेशी पीने से बिलकुल इनकार करता है तो फिर सरदार अवश्य ही उससे कुछ रुष्ट हो जाता है। वह ताड़ी इतना पीता है कि पीते पीते उसको नशा सवार हो जाता है। नशे में वह बड़े मज़े की बातें करता है। ताड़ी के दौरे के समाप्त होने के पश्चात् सरदार अपने साथियों के साथ शिकार खेलने जाता है। शिकार में वह परदेशी को भी साथ ले जाता है। बन्दर, लंगूर, तोता, स्वर्गीय पत्ती आदि का शिकार किया जाता है। बहुधा बन्दर को यूं ही खड़ा भून कर खाया जाता है।

सरदार परदेशी को अपने खेत, बाग आदि की भी सैर कराता है। धान और मक्का की खेती अधिक होती है। बाग में नारियल, केला, शहतूत, बैर और अञ्जीर के वृत्त लगाये जाते हैं। खेत बड़े बड़े कई एकड़ भूमि

के होते हैं। खेतों के मजदूर नाज की ही मजदूरी पाते हैं। पैसों द्वारा वहाँ मजदूरी चुकाने का रिवाज नहीं है।

घरेलू पशुओं में बैल, गाय, सुअर, बकरी, भेड़ आदि हैं। यह पशु बाड़ों में रक्खे जाते हैं। रात में इन पशुओं को मूला जंगली पशु का भय रहता है। यह पशु तेंदुये की भाँति होता है और घरेलू पशुओं को खा जाता है। गाय और बैल बड़े छोटे कद के होते हैं। उनके शरीर पर लम्बे काले बाल रहते हैं। सींग छोटी होती है। घर की रखवाली के लिये कुत्ते पाले जाते हैं। कुत्ते अच्छी जाति के होते हैं और बड़े शिकारी होते हैं।

जब परदेशी जाना चाहता है तो वह बड़ी खुशी से विदा किया जाता है। उसे कुछ वस्तु पुरस्कार रूप में दी जाती है। परदेशी से बारूद, छर्रे, बन्दूक की गोलियां आदि सामान पाने के वह बड़े इच्छुक रहते हैं। विदाई करते समय गाँव के लोगों की एक बड़ी भीड़ गाँव के बाहर तक परदेशी के साथ जाती है।

पापुवा जाति के रीति-रिवाज

जब पापुवा जाति में कोई बच्चा पैदा होता है तो यदि वह लड़का हुआ तो किसी जादूगर के पास ले जाया जाता है। जादूगर उसके ऊपर कुछ मन्त्र पढ़ कर फूँकता है और फिर उसके शरीर पर साँप के तेल से मालिश करता है जिससे वह मज़बूत और चतुर होवे। इस कार्य के लिये पिता जादूगर को इनाम देता है। यदि लड़की होती है तो उसे उसका पिता जादूगर के पास नहीं ले जाता है। जैसे ही लड़की चलने फिरने लगती है उसे उपयोगी धन्धों के करने की शिक्षा प्रदान की जाती है। जब तक उसका ब्याह नहीं हो जाता उसे बहुत काम करना पड़ता है। ब्याह होने के पश्चात् उसका पति उसके साथ अच्छा व्यवहार करता है।

बचपन में पापुवा बालक को अपनी बहिन की भांति ही कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसका अधिकांश समय कसरत करने, कुश्ती लड़ने, लड़ाई सीखने और शिकार करने की कला के सीखने में व्यतीत होता है। उसे धनुष-बाण चलाना, बन्दूक चलाना, भाले

चलाना और तलवार चलाना सिखाया जाता है। वह इतना चतुर हो जाता है कि उसका कोई भी योरुपीय तलवार चलाने वाला सामना नहीं कर सकता है। युद्ध में धनुष-बाण का प्रयोग कम किया जाता है जब तक कि उन पर पीछे से बन्दूक से आक्रमण न किया जावे। लड़ाई में वह छोटी तलवार और भाले का प्रयोग करते हैं। उनकी ढाल लम्बी सँकरी होती है और उसके दोनों सिरे तेज़ धार के बने रहते हैं। उससे वह अपने शत्रु के प्राण ले सकते हैं। ढाल वह अपने बाएँ पाथ में बाँधे रहते हैं। ढाल लकड़ी की बनी रहती है और उसके सिरे लोहे के होते हैं। प्रत्येक उत्साही पापुवा अपने पास मसकेट बन्दूक रखना पसन्द करता है। प्रत्येक भांति की खराब बन्दूकें वहाँ ले जाकर विदेशियों द्वारा अच्छे मूल्य पर बेची जाती हैं।

जब बालक २४ वर्ष का हो जाता है तो उसकी गणना युवा लोगों में होने लगती है परन्तु जब तक वह अपने किसी शत्रु को मार नहीं डालता या कोई चतुरता पूर्ण चोरी नहीं कर लेता तब तक उसका ब्याह नहीं होता है।

१—मेलानेसिया में अविवाहित स्त्री के लिये डोबो या वृक्ष-घर ।

२—न्यू गिनी के दो बालक।

३—न्यू गिनी का कोइआरी सरदार (लोहिआ)

ब्याह के समय दूल्हा और उसके साथी दुल्हन के घर पर जाते हैं और उसके साथियों सहित उसे दूल्हा के घर ले आते हैं। दूल्हा के घर पर लगभग एक सप्ताह तक भोज रहता है। ब्याह के समय स्त्रियाँ भी मर्दों की भांति खूब ताड़ी पीती हैं। भोज समाप्त होने के पश्चात् दुल्हन का पिता दहेज देता है। यदि पिता नहीं रहता तो दहेज दूसरे निकट सम्बन्धी द्वारा चुकाया जाता है परन्तु दहेज देना बड़ा आवश्यक है। बिना दहेज के ब्याह नहीं होता है।

सच्चे पाथुवा निवासी अपने बृद्ध जनों का बड़ा आदर करते हैं; यदि कोई पुत्र अपने पिता से झगड़ा करता है तो वह एक हत्यारे की भांति ग़ुलाम बना कर बेंच दिया जाता है। यदि पुत्र अपने पिता की परवाह और देख भाल नहीं करता तो उसके पास जो सामान रहता है उसका आधा भाग जुर्माने की भांति ले लिया जाता है। पुत्र अपने पिता को कभी मार नहीं सकता। यदि वह उसे चोट पहुँचाता है तो फिर उसे जान से मार डाला जाता है परन्तु ऐसा समय शायद ही कभी आता है।

पापुआ लोगों के बीच मृतक शरीर को बन में वृक्ष के ऊपर रखने का रिवाज है। मृतक शरीर मोटे कपड़े या चटाई में लपेट दिया जाता है। भूमि और निर्जन बन में वृक्ष पर रख दिया जाता है। भूमि में गाड़ने का भी रिवाज है। समाधि के ऊपर एक भाला सीधा गाड़ दिया जाता है। मृतक शरीर को वृक्ष पर रखने या गाड़ने के बाद उसके समीप कोई नहीं जाता है।

पापुवा प्रान्त की भाषा बड़ी सरल है। शब्दों का उच्चारण भली भांति किया जा सकता है। भाषा के बहुतेरे शब्द मलय, हिन्दुस्तानी और चीनी भाषा के लिये गये हैं। उनकी भाषा बड़ी सरलता के साथ सीखी जा सकती है।

पापुवा जाति का विश्वास है कि चिंगूमलान नदी से संसार के सभी समुद्र, नदियां, झीलें आदि बनी हैं। चिंगूमलान के तीन भाई थे। उनका नाम ऐम, लूशांग और दिल्लाह था। ऐम से पृथ्वी बनी, लूशांग से बनस्पति संचार हुआ और दिल्लाह से पशुवर्ग की उत्पत्ति हुई। चिंगूमलान की बहिन का नाम मौशात था उससे पक्षी वर्ग की उत्पत्ति हुई है।

जादूघर का दिन

न्यूगिनी में जंगलों के गावों में जादूगर होते हैं। जादूगर अपनी क्रिया से लोगों पर बड़ा प्रभाव जमा लेता है। वह झाड़ फूंक और वैद्य का काम करता है। जादूगर के घर में मनुष्य के सिर की खोपड़ी ढकी रहती है। जादूगर इन खोपड़ियों को पूजता है। खोपड़ियों के अतिरिक्त मनुष्य की हड्डियाँ, मरी सुखाई हुई छिपकलियों, साँपों, चिड़ियों और दूसरे पशुओं की लाशें रहती हैं। पवित्र छोटे छोटे पत्थर के टुकड़ों का भी ढेर रहता है। जादूगर इन पत्थरों से रोगों की चिकित्सा करता है। उसके घर में मकड़े के जाल का बना हुआ एक झोला रहता है। एक डाक्टर के घर उपरोक्त वस्तुएँ देखी गईं थीं और मकड़े के जाल के झोले में एक सुन्दर बाँस का बना हुआ संदूक था। उस संदूक में एक छोटा गोला था जो काले पत्थर का बना हुआ मालूम होता था। गोले में एक पतली हड्डी एक ओर दिखाई देती थी। इसका सिरा सुई की भांति नुकीला था। यह गोला बड़ा ही भयानक होता है और कदाचित ज़हर का बना होता है। गोले की सुई जिस किसी को

चुभा दी जाती है वह अवश्य मर जाता है। सुई चुभो-कर मारने का अभ्यास एक एक सुअर के बच्चे तथा एक चिड़िये पर किया गया और दोनों ही ५ मिनट के भीतर ही मर गये। उस घर में एक देवता की लकड़ी की एक बड़ी मूर्ति भी थी। शायद वह जादूगर इस मूर्ति की भी पूजा किया करता था।

कावा

यह एक मादक पेय है। यह कावा नामक पौदे की जड़ अथवा पत्तियों को कुचल वा पीस कर तयार किया जाता है। कावा का पौधा एक झाड़ी की भांति होता है। पौलीनीसिया द्वीपसमूह में यह पौदा पाया जाता है। न्यूगिनी में भी यह काफी मिलता है। इसी कारण यहां कावा पीने का रिवाज भी बहुत है।

कावा पेय तयार करने की कई विधि है। जंगली न्यूगिनी निवासी इसकी जड़ को लाकर साफ पानी में धो डालते हैं और फिर मुँह में डाल कर खूब कुचलते हैं। जब वह भलीभांति कुचल जाता है तो उसे एक
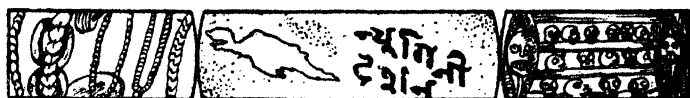
लकड़ी के बर्तन में उगल देते हैं। जड़ों के छोटे छोटे टुकड़े काट कर कुचले जाते हैं। सभी टुकड़ों के कुचलने के बाद उसके गोले बना लिये जाते हैं और फिर अंजुली में एक एक गोले लेकर उस पर साफ पानी डाला जाता है। पानी इतना ही डाला जाता है कि गोला भीग कर निचोड़ने योग्य हो जावे। फिर वह निचोड़ दिया जाता है। निचोड़ने का काम लकड़ी के बने हुये सुन्दर पात्र में होता है। निचोड़ने पर जो रस तयार होता है वही कावा पेय है। कावा पेय तयार करने का काम कई मनुष्य संगठित रूप से करते हैं और पेय बनाते समय तक कोई व्यक्ति बोल नहीं सकता है। यदि कोई बोल देता है तो उसे सज़ा दी जाती है।

कहीं कहीं जड़ों के कुचलने की क्रिया केवल कुँवारी लड़कियों द्वारा कराई जाती है। जहाँ लोग अब कुछ सभ्य होने लगे हैं वहाँ नारियल के पत्तों के डंठल से कुचलने और दबा कर रस निकालने का काम लिया जाता है। कहीं कहीं पर तो पत्थर पर भांग की भांति जड़ें तथा पत्तियां पीसी जाती हैं परन्तु पीस कर तथा नारियल के पत्तों के डंठल द्वारा दबा कर तयार की हुई

कावा उतनी अच्छी तथा उपयोगी नहीं होती है जितनी कि मुख से चबा कर तयार की हुई होती है।

यह तयार होने पर मटमैला होती है। पत्ती से तयार की हुई कावा का रंग मटमैला हरे रंग का होता है। पीने में यह तीखी और कड़वी होती है। मुख से चबा कर बनाई हुई कावा में कुछ मिठास आ जाती है।

कावा पेय का प्रयोग उत्सव के समय खूब किया जाता है। सरदारों के यहाँ इसके तयार करते समय बड़ा उत्सव होता है और इसके तयार करने का समय बड़ा पवित्र माना जाता है।

कावा एक या दो घूँट पी जाती है परन्तु जिसमें पानी अधिक मिला रहता है उसे लोग अधिक भी पीते हैं। थोड़ा पीने पर यह बड़ी लाभदायक तथा ताक़त का काम देती है परन्तु अधिक पीने से चर्म रोग, खुजली आदि उत्पन्न हो जाते हैं। न्यूगिनी निवासी इसे बड़े चाव से प्रयोग करते हैं और अपने यहाँ आये हुए मेहमान को भी पिलाने का प्रयत्न करते हैं। यदि मेहमान पीने से इन्कार करता है तो वह रुष्ट हो जाते
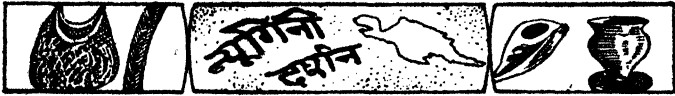
हैं। उनके रुष्ट होने का कारण शायद यही होता है कि वह कावा को एक अच्छी पवित्र वस्तु मानते हैं।

कावा का नशा पीने के बाद पहले शरीर के भिन्न भिन्न भागों में होता है। खोपड़ी पर नशा कुछ समय के पश्चात् धीरे धीरे चढ़ता है क्योंकि देखा गया है कि इसके पीने वाले काफी समय तक बातचीत साधारण रूप से करते रहते हैं जब कि उनके हाथ पैर या शरीर के दूसरे भागों में स्फूर्ति आ जाती है। पीने के लगभग आध घंटे के बाद नशा चढ़ता है।

कावा का नशा आ जाने पर नींद अधिक आती है और लोग जहां कहीं भी होते हैं वहीं बहुधा सो जाते हैं। कावा का नशा पानी के सम्बन्ध से अधिक बढ़ता है। देखा गया है कि कावा का नशा उतर जाने पर मनुष्य पानी में पड़ा रहता है या नहाता है तो उससे फिर नशा सवार हो जाता है।

देश दर्शन

ज़हरीले पशु

न्यूगिनी में बहुत से ज़हरीले पशु होते हैं। छिपकिली, मकड़ी, मक्खी, पतिंगे, सांप, बिच्छू आदि सभी बड़े ज़हरीले होते हैं। सांप और बिच्छू का ज़हर तो बहुत होता है और जिस किसी को यह काट लेते हैं उसका जीना दुर्लभ हो जाता है।

बिच्छू कई प्रकार के छोटे और बड़े होते हैं। अधिकतर लाल, भूरे और काले होते हैं। यह बिच्छू नौ या दस इंच तक बड़े होते हैं और बड़े क्रोधी होते हैं। जब इनके क्रोध आता है तो अपने आरे (जिससे डंक मारते हैं) को उठा कर गोलाकार मार्ग में घूमने लगते हैं और बड़ी देर तक घूमते रहते हैं। क्रोध के समय यदि बिच्छू एकत्रित कर दिये जाते हैं तो वह बड़ा सुन्दर युद्ध करते हैं और ५ मिनट के भीतर ही लड़ते लड़ते मर जाते हैं। उनके मर जाने से ही उनके बिष की भीषणता का अनुमान किया जा सकता है।

एक बार एक न्यूगिनी निवासी को एक बड़े बिच्छू ने डंक मार दिया। डंक मारने पर वह मनुष्य बेहोश हो गया और ज़मीन पर लेट गया। डंक का घाव पिन

के सिरे के बराबर था किन्तु विष इतना गहरा था कि उस मनुष्य का शरीर घाव के पास से ही श्याम हो रहा था। घाव को काट तथा दबाकर विष निकालने का बहुतेरा प्रयत्न किया गया परन्तु विष बाहर नहीं हुआ और चिकित्सा करने पर भी उसके प्राण की रक्षा नहीं हो सकी। मरने के पश्चात् उसका समस्त शरीर काला हो गया था। मरने के बाद उसके साथियों ने शीघ्र ही उसे वहीं धरती खोद कर गाड़ दिया।

आपसी युद्ध

न्यूगिनी के एक गांव में एक ही वर्ग के लोग रहते हैं। गाँव के सभी प्राणी बड़े मेलजोल से रहते हैं और यदि किसी पर क्षणिक मात्र भी आफत आ गई तो सभी लोग दौड़ कर पहुँच जाते हैं। एक गांव के निवासी बहुधा दूसरे गांव के निवासी से युद्ध किया करते हैं।

यदि किसी गाँव के किसी व्यक्ति ने किसी दूसरे गांव के किसी निवासी को चोट पहुँचा दी या मार डाला तो फिर मारने वाले के गांव के निवासियों को सदैव मारे जाने वाले के गांव के निवासियों से भय बना

रहता है इसका मुख्य कारण यह है कि वह अपना बदला अवश्य चुकाते हैं। बहुधा एक गांव के निवासी दूसरे गांव पर आक्रमण कर देते हैं और फिर उनमें अच्छा घमासान युद्ध होता है, कुछ लोगों की जानें जाती हैं और कुछ घायल होते हैं। थोड़ी सी शंका होने पर उस गाँव के सभी लोग लड़ाई पर तयार हो जाते हैं।

एक बार कुछ लड़के एक गाँव के समीप एक बाग में खेल रहे थे। ईश्वर कोप से उधर एक दूसरे गांव के तीन निवासी निकल पड़े और लड़कों से बातचीत हो गई। इस पर दूसरे गांव के किसी व्यक्ति ने एक लड़के के पैर में भाला मार दिया। जब लड़के घर आये तो यह समाचार समस्त गांव में फैल गया। दूसरे दिन प्रातः काल होते ही समस्त गांव के रहने वाले भाले, बल्लम, तीर, छोटी तलवारें और ढाल आदि लेकर दूसरे गाँव पर चढ़ गये। वह गाँव लगभग ५ मील की दूरी पर था। उस गाँव के लोग भी चढ़ाई का समाचार पाकर गाँव के बाहर आये और खासा घमासान युद्ध हुआ। जिसमें दोनों गाँवों के कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुये। यह पता नहीं युद्ध की समाप्ति कैसे हुई।

अपने गाँव में लौटने के बाद भी उन्हें आक्रमण होने का भय बना रहा। एक दिन अचानक गाँव में भगदड़ मच गई। लड़के, जवान और वृद्ध जिसको देखो वही भाला-बल्लम लिये गांव के बाहर भागा जा रहा था। अस्त्र लेकर जाने वालों में कितने ही तो बीमार, वृद्ध और चोट खाये हुये लोग थे। सभी बड़े उत्साहपूर्वक लड़ाकू जवानों की भांति अपने अस्त्र-शस्त्र उछालते, ऐंठते चले जाते थे। गांव की स्त्रियाँ, लड़कियाँ और छोटे बच्चे घरों में या छतों पर चले गये थे। गाँव में सन्नाटा छा गया था। गाँव में भगदड़ का कारण पूछने पर कोई कुछ उत्तर नहीं देता था।

इस प्रकार सभी लोग गाँव से बाहर जंगल तक गये और वहाँ पर शत्रु के किसी प्रकार के चिन्ह न पाकर वापस लौट आये। लौटने पर मालूम हुआ कि किसी व्यक्ति ने गांव के पास के बन में एक घने स्थान पर कुछ लोगों के पैर के निशान देखे थे और झाड़ी से खरखराहट की आवाज़ भी सुनी थी। वह स्थान ऐसा था कि वहां साधारण रूप से गांव वाले नहीं जाते थे। उसको यह शंका हो गई थी कि शायद उसके गांव पर

दूसरे गांव वाले आक्रमण करने की तयारी कर रहे हैं। इस पर उसने गांव को खबर दे दी और गांव वाले अपने गाँव की रक्षा करने के लिये अस्त्र-शस्त्र लिये जंगल की ओर भागे।

इतना परेशान होने पर भी गांव के किसी व्यक्ति ने उस व्यक्ति को कुछ भी बुरा भला नहीं कहा जिसने शत्रु के तयारी की सूचना गांव में फैलाई थी। इसका कारण यह था कि इस प्रकार की घटनाएँ वहां सदैव हुआ ही करती हैं।

न्यूगिनी के निवासी बड़े बहादुर, उत्साही तथा देश और जाति भक्त होते हैं। बचपन से ही उन्हें लड़ना और कसरत करना सिखाया जाता है। वे अच्छे मोटे हट्टे-कट्टे होते हैं। देखने में भी उनका शरीर बड़ा सुडौल लगता है। अप्रसन्न होने पर वह पत्थर की भाँति कठोर और प्रसन्न होने पर मोम की भांति कोमल हो जाते हैं।
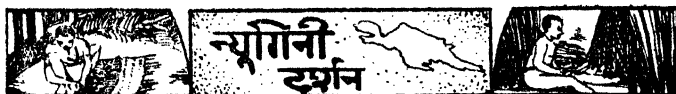
स्कूल

न्यूगिनी एक जंगली टापू है। यहां पर धर्म प्रचारक ईसाइयों द्वारा स्कूल खोले गये हैं जो बच्चों और युवकों तथा युवतियों को प्रायमरी शिक्षा देते हैं।

यहां की पाठशालाओं में बच्चों के साथ ही साथ १८ वर्ष के ऊपर के मर्द तथा स्त्रियां भी जाती हैं। जिस किसी को भी कुछ पढ़ने की लालसा हुई वही भर्ती हो सकता है। जंगली होने के कारण बालक बहुत शोर मचाते रहते हैं। उनका चुप रहना ही असम्भव होता है। स्कूल में बच्चों को सजा दी जाती है और बेंत की छड़ियां अध्यापकों के सामने दीवार पर टंगी रहती हैं।

अच्छे से अच्छे स्कूल में १५० से अधिक छात्र और छात्रायें नहीं हैं। न्यूगिनी के बालक बड़े समझ-दार तथा अध्यापक के आज्ञापालक होते हैं। यदि उन्हें कोई बात अच्छी तरह समझा दी जाती है तो फिर वह उसे नहीं भूलते हैं। सजा देने पर वह जरा भी दुष्टता नहीं दिखाते और अध्यापक की प्रत्येक बात मानते हैं।

देश दर्शन

एक बार एक स्कूल में एक बड़ी लड़की पढ़ने आई मास्टर साहेब को उसे वर्णमाला सिखाने में बड़ी कठिनता हुई आखिर अप्रसन्न होकर उन्होंने कहा तुम छोटे बच्चों के बीच बैठने योग्य हो। उसने शीघ्र ही गुरु की आज्ञा मान ली और हंसती हुई छोटे बालकों के मध्य जा बैठी। यद्यपि मास्टर साहब उसे अपनी बात से केवल शर्मिन्दा करना चाहते थे। थोड़े समय में ही उन बच्चों के बीच वह बड़ी चतुरता से काम करने लगी। और बच्चे उसके काबू में हो गये। स्कूल में लिखना पढ़ना और जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि की शिक्षा दी जाती है। ऊँची शिक्षा के लिये छात्र को विदेश जाना पड़ता है।

वर्तमान दशा

७ दिसम्बर सन १६४२ ई० को जापान ने प्रशान्त महासागर के युद्ध का श्रीगणेश किया और थाई देश, मलय, सिंगापुर, मनिल्ला, पर्ल हार्बर, होनोलूलू आदि स्थानों पर हवाई अक्रमण किये। जापान की समुद्री शक्ति बड़ी मजबूत प्रतीत होती है। उसकी जल सेना का ठीक तौर पर अंदाज़ नहीं लगाया जा सकता है। जापान ने समस्त प्रशान्त महासागरीय द्वीपों पर अधिकार करने का निश्चय सा कर लिया है। इसलिये अपने निश्चय के अनुसार २३ जनवरी को जापानी विमानों ने राबौल के बन्दरगाह पर हवाई हमला कर दिया। नगर पर दो बार आक्रमण हुआ और न्यूगिनी के समीप ६ जापानी जहाज जाते हुये दिखाई पड़े। उसी दिन साल्मन द्वीप के तुगलानी स्थान पर भी आक्रमण हुआ। राबौल से आस्ट्रेलिया और न्यूगिनी के नगरों से तार इत्यादि काट दिये गये। राबौल का तार घर नष्ट कर दिया गया। आक्रमण में ४० जापानी विमानों ने भोग लिया था।

इसके बाद जापानी सेना राबौल बन्दरगाह और

कीटा बन्दरगाह पर उतार दी गई। कीटा स्थान राबौल के दक्षिण-पूर्व बौगेन विल्ले द्वीप में है। राबौल का बन्दरगाह न्यू ब्रिटेन द्वीप के उत्तरी तट पर है। बन्दरगाह पर पांच सेना ले जाने वाले जहाज़ और ३ क्रूशियर जहाज़ और ३ विध्वंसकारक जहाज पहुँच गये। न्यू इङ्गलैंड के दक्षिणी तट के गास्माटा बन्दरगाह के ऊपर कुछ जापानी विमान उड़ते हुये दिखलाई पड़े। उसके बाद न्यूगिनी की बुलोलो नामक सोने की खान के ऊपर जापानी विमान मंडराने लगे।

आस्ट्रेलिया के सेना-मंत्री श्रीमान् फोर्डे ने कहा राबौल पर अधिकार करके जापानी आस्ट्रेलिया पर जरूर धावा मारेंगे। उसके बाद आस्ट्रेलिया की सरकार ने इङ्गलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका से शीघ्रातिशीघ्र सहायता मांगी।

जापानी सेना के उतर जाने से जापानी सेना तथा आस्ट्रेलियन सेना में युद्ध आरम्भ हो गया और ले स्थान (पश्चिमी राबौल द्वीप) पर भीषण युद्ध हुआ। ले स्थान को जापानियों ने बम वर्षा करके सत्यानाश कर डाला। गोताखोर जापनी विमानों ने धरती के समीप गोते लगा कर मशीन गनों का प्रयोग किया।

इस कारण उन्हें बड़ी सफलता प्राप्त हुई और नगर पर उनका अधिकार हो गया।

धीरे धीरे जापानी विमानों का आक्रमण बढ़ने लगा और मोरेस्बी बन्दरगाह पर भी ६ मार्च को आक्रमण हुआ। मोरेस्बी पर ८५ बम गिराये गये जिससे नगर के बहुत से घर नष्ट हो गये। राबौल और कई एक दूसरे स्थानों पर जापानी अधिकार हो गया। पश्चिमी न्यूगिनी में जापानी सेना उतर गई और उसने पश्चिमी न्यूगिनी पर अधिकार कर लिया। पूर्व की ओर भी जापानी सेना के उतरने का समाचार प्राप्त हुआ। राबौल और मोरेस्बी बन्दरगाहों पर जापानी जल सेना का बड़ा जहाजी बेड़ा पहुँच गया।

अमरीका और आस्ट्रेलिया के विमानों ने जापानी जहाजी बेड़े पर आक्रमण करके २३ जापानी जहाज डुबा तथा नष्ट कर दिये गये। इसमें कई एक क्रूशियर (छोटे लड़ाका जहाज) और विध्वंसकारक जहाज भी थे। मोरेस्बी बन्दरगाह पर भीषण युद्ध करने की पूरी तयारी मित्र राष्ट्रों की ओर से होने लगी। आस्ट्रेलिया में अमरीकन सेना पहुँची और जनरल मकार्थर प्रधान सेनापति बना दिया गया।